श्री आचार्य नेमिचंद्र विरचित

मार्गणाओं में उदय-व्युच्छित्ति

Presentation Developed By:
Smt. Sarika Vikas Chhabra

मंगलाचरण

पणमिय सिरसा णेमिं, गुणरयणविभूसणं महावीरं ।
सम्मत्तरयणणिलयं, पयडिसमुक्कित्तणं वोच्छं ॥ 1 ॥
णमिऊण णेमिचंदं, असहायपरक्कमं महावीरं ।
बंधुदयसत्तजुत्तं, ओघादेसे थवं वोच्छं ॥ 87 ॥

Designed by Pngtree

गदियादिसु जोग्गाणं, पयडिप्पहुदीणमोघसिद्धाणं ।
सामित्तं णेदव्वं, कमसो उदयं समासेज्ज ॥284॥

- अर्थ— जो गुणस्थानों में बताया गया है ऐसा
- प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश का स्वामीपना
- गति आदि मार्गणाओं में उदय की अपेक्षा घटित करना चाहिये ॥284॥

मार्गणा किसे कहते हैं?

मार्गण शब्द का अर्थ है — अन्वेषण, खोजना

जिन परिणामों के द्वारा जीव का अन्वेषण किया जाए अथवा जिन पर्यायों में जीव का अन्वेषण किया जाए, उन्हें मार्गणा कहते हैं ।

14 मार्गणायें

गति	इन्द्रिय	काय	योग	वेद
कषाय	ज्ञान	संयम	दर्शन	लेश्या
भव्य	सम्यक्त्व	संज्ञी	आहार	

गति	नरक, तिर्यंच, मनुष्य ,देव
इन्द्रिय	1, 2, 3, 4, 5 इन्द्रिय
काय	पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति, त्रस
योग	मन(4), वचन(4), काय(7)
वेद	पुरुष, स्त्री, नपुंसक
कषाय	क्रोध, मान, माया, लोभ
ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय, केवलज्ञान, कुमति, कुश्रुत, कुअवधि

संयम	सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय, यथाख्यात, संयमासंयम, असंयम
दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि, केवलदर्शन
लेश्या	कृष्ण, नील, कपोत, पीत, पद्म, शुक्ल
भव्य	भव्य, अभव्य
सम्यक्त्व	उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक, मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र
संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी
आहार	आहार, अनाहार

गदि आणुआउउदओ, सपदे भूपुण्णबादरे ताओ ।
उच्चुदओ णरदेवे, थीणतिगुदओ णरे तिरिये ॥285॥

- अर्थ— किसी भी विवक्षित भव के पहले समय में ही उस विवक्षित भव के योग्य गति, आनुपूर्वी और आयु का उदय होता है । और 'सपदे' कहने से एक जीव के समान ही गति, आनुपूर्वी तथा आयु का उदय युगपत् हुआ करता है ।
- आतप नामकर्म का उदय बादर पर्याप्त पृथ्वीकायिक जीव के ही होता है ।
- उच्चगोत्र का उदय मनुष्य और देवों के ही होता है, और
- स्त्यानगृद्धि आदि तीन निद्रा प्रकृतियों का उदय मनुष्य और तिर्यंचों के ही होता है ॥285॥

www.JainKosh.org

उदय प्रकृतियों के नियम

विवक्षित गति, आनुपूर्वी, आयु कर्म का उदय अपनी-अपनी गति में ही होता है ।

आनुपूर्वी का उदय मात्र विग्रहगति में ही होता है ।

प्रकृति	स्वामी
नरक गति, नरक-गत्यानुपूर्वी, नरकायु	नारकी
तिर्यंच गति, तिर्यंच-गत्यानुपूर्वी, तिर्यंचायु	तिर्यंच
मनुष्य गति, मनुष्य-गत्यानुपूर्वी, मनुष्यायु	मनुष्य
देव गति, देव-गत्यानुपूर्वी, देवायु	देव

उदय प्रकृतियों के नियम

प्रकृति	स्वामी
आतप	बादर पर्याप्त पृथ्वीकायिक
उच्च गोत्र	मनुष्य, देव
स्त्यानगृद्धि-3	मनुष्य, तिर्यंच

संखाउगणरतिरिए, इंदियपज्जत्तगादु थीणतियं ।
जोग्गमुदेदुं वज्जिय, आहारविगुव्वणुट्ठवगे ॥286॥

- अर्थ— संख्यात वर्ष की आयु वाले कर्मभूमिया मनुष्य और तिर्यंचों के ही इन्द्रिय पर्याप्ति के पूर्ण होने के बाद स्त्यानगृद्धि आदि तीन निद्राओं का उदय हुआ करता है ।
- परंतु मनुष्यों में भी आहारक ऋद्धि और वैक्रियिक ऋद्धि की उत्थापना करने के काल में इनका उदय नहीं होता ॥286॥

www.JainKosh.org

स्त्यानगृद्धि-3 संबंधी नियम

इनका उदय

कर्मभूमिया मनुष्य,

कर्मभूमिया तिर्यंच

को इन्द्रिय पर्याप्ति पूर्ण होने के पश्चात् ही संभव है ।

याने लब्ध्यपर्याप्त और निर्वृत्त्यपर्याप्त को इनका उदय नहीं है ।

इनमें भी आहारक और विक्रिया ऋद्धि के प्रयोग के समय इन 3 का उदय नहीं होता है ।

www.JainKosh.org

अयदापुण्णे ण हि थी, संढोवि य घम्मणारयं मुच्चा ।
थीसंढयदे कमसो, णाणुचऊ चरिमतिण्णाणू ॥287॥

- अर्थ— निर्वृत्त्यपर्याप्तक असंयत गुणस्थान में स्त्री वेद का उदय नहीं है क्योंकि असंयतसम्यग्दृष्टि मरण करके स्त्री नहीं होता ।
- इसी प्रकार पहले घर्मा नामक नरक के सिवाय अन्य तीन गतियों की चतुर्थ गुणस्थानवर्ती निर्वृत्त्यपर्याप्त अवस्था में नपुंसक वेद का भी उदय नहीं होता ।
- इसी कारण से स्त्री वेदवाले असंयत के चारों आनुपूर्वी का तथा नपुंसकवेद वाले असंयत के नरक के बिना अंत की तीन आनुपूर्वी प्रकृतियों का उदय नहीं होता ॥287॥

www.JainKosh.org

किसके किसका उदय संभव नहीं ?

स्वामी	प्रकृति
निर्वृत्ति-अपर्याप्त असंयत गुणस्थानवर्ती	स्त्रीवेद
निर्वृत्ति-अपर्याप्त असंयत गुणस्थानवर्ती (प्रथम नरक छोड़कर)	नपुंसकवेद
असंयत स्त्रीवेदी	4 आनुपूर्वी
असंयत नपुंसकवेदी	3 आनुपूर्वी (नरक छोड़कर)

इगिविगलथावरचऊ, तिरिये अपुण्णो णरे वि संघडणं । ओरालदु णरतिरिए, वेगुव्वदु देवणेरइए ॥288॥

- अर्थ— एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय आदि विकलत्रय और स्थावर आदि चार प्रकृतियों का उदय तिर्यंच के होने योग्य है ।
- परन्तु अपर्याप्त प्रकृति मनुष्य के भी उदय होने योग्य है ।
- वज्रऋषभनाराचादि छह संहनन और औदारिक-2 प्रकृतियाँ मनुष्य तथा तिर्यंच के उदय होने योग्य हैं ।
- वैक्रियिक-2 प्रकृतियाँ देव और नारकियों के ही उदय होने योग्य हैं ॥288॥

उदय प्रकृतियों के स्वामी

प्रकृति	स्वामी
एकेन्द्रिय, विकलत्रय	तिर्यंच
स्थावर, सूक्ष्म, साधारण	तिर्यंच
अपर्याप्त	तिर्यंच, मनुष्य
6 संहनन, औदारिक-2	तिर्यंच, मनुष्य
वैक्रियिक-2	देव, नारकी

तेउतिगूणतिरिक्खे-सुज्जोवो बादरेसु पुण्णेसु ।
सेसाणं पयडीणं, ओघं वा होदि उदओ दु ॥289॥

- अर्थ— तेजकायिक, वायुकायिक और साधारण वनस्पतिकायिक इन तीनों को छोड़कर अन्य बादर पर्याप्तक तिर्यंचों के उद्योत प्रकृति उदय-योग्य है । और
- शेष बची प्रकृतियों का उदय गुणस्थान के क्रम से जानना ॥289॥

उदय प्रकृतियों के स्वामी

उद्योत प्रकृति का उदय

अग्नि, वायु, साधारण जीवों को छोड़कर,

बादर पर्याप्त तिर्यंच को होता है ।

शेष प्रकृतियों का उदय गुणस्थानवत् जानना ।

www.JainKosh.org

थीणतिथीपुरिसूणा, घादी णिरयाउणीचवेयणियं ।
णामे सगवचिठाणं, णिरयाणू णारयेसुदया ॥290॥

- अर्थ— स्त्यानगृद्धि आदिक तीन, स्त्री वेद और पुरुषवेद – इन पाँच के सिवाय घातीकर्मों की 42 प्रकृतियाँ;
- नरकायु, नीचगोत्र और साता-असाता वेदनीय तथा नामकर्म में से नारकियों के भाषापर्याप्ति के स्थान में होने वाली 29 प्रकृतियाँ और नरकगत्यानुपूर्वी – ये सब 76 प्रकृतियाँ नरकगति में उदय होने योग्य हैं ॥290॥

www.JainKosh.org

मार्गणाओं में व्युच्छित्ति निकालने के नियम

1) कुल 122 उदय-योग्य प्रकृतियों में से विवक्षित मार्गणा में जो प्रकृतियाँ उदय-योग्य ही नहीं हैं, ऐसी अनुदयरूप प्रकृतियों को घटा लें ।

2) जिन प्रकृतियों को घटाया है, वे प्रकृतियाँ अब उस-उस गुणस्थान में घटायी नहीं जायेंगी क्योंकि पहले ही घटा चुके हैं ।

3) मार्गणाओं में विशिष्ट नियम के कारण जो प्रकृतियाँ बाद में व्युच्छिन्न होती थीं, वे पहले भी व्युच्छिन्न होती हैं । उनकी व्युच्छित्ति यथायोग्य करें ।

4) शेष सारी व्युच्छित्ति, उदय, अनुदय गुणस्थान जैसा ही करना है ।

नरकगति

उदय-योग्य प्रकृतिया

घातिया कर्म की 47 – 3 स्त्यानगृद्धि – पुरुषवेद – स्त्रीवेद =	42
नरकायु	1
2 वेदनीय	2
नीच गोत्र	1
नामकर्म	30
कुल	76

122 – 76 = 46 प्रकृतिया नारकी के लिए उदय-योग्य ही नहीं हैं।

नारकी को नामकर्म की कौन-सी 30 प्रकृतिया उदय-योग्य हैं ?

29

भाषा पर्याप्ति के समय उदयवाली

1

नारकानुपूर्वी

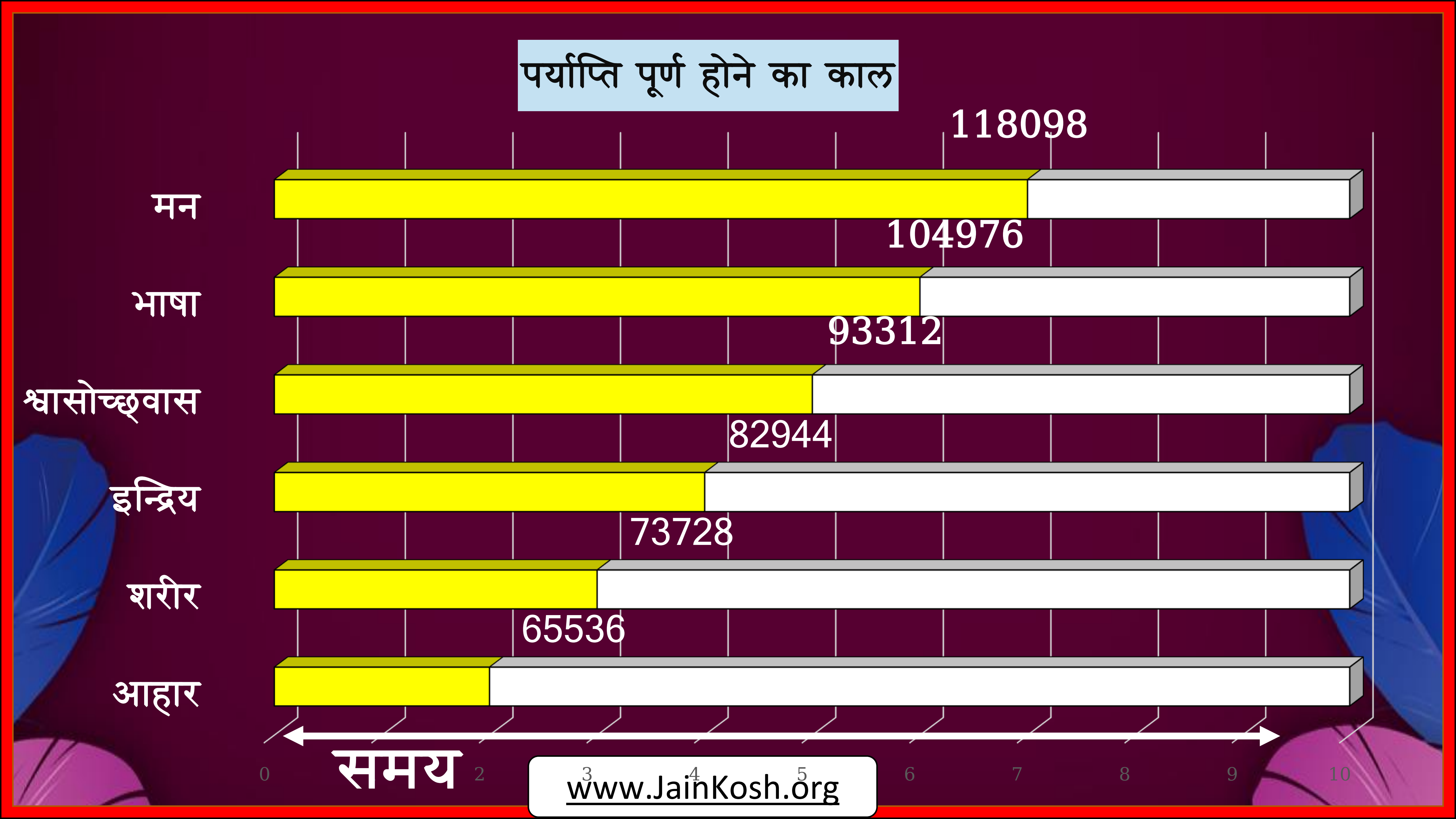

पर्याप्ति पूर्ण होने का काल
118098
104976
93312
82944
73728
65536
मन
भाषा
श्वासोच्छ्वास
इन्द्रिय
शरीर
आहार
समय
0
2
3
4
5
6
7
8
9
10
www.JainKosh.org

वेगुव्वतेजथिरसुहदुग दुग्गदिहुंडणिमिणपंचिंदी ।
णिरयगदि दुब्भगागुरु-तसवण्णचऊ य वचिठाणं ॥291॥

- अर्थ— वैक्रियिक, तैजस, स्थिर, शुभ इनका जोड़ा, और अप्रशस्तविहायोगति, हुंडकसंस्थान, निर्माण, पंचेंद्रिय जाति, नरकगति; तथा दुर्भग-अगुरुलघु-त्रस-वर्ण इन 4 की चौकड़ी – इस प्रकार ये सब 29 प्रकृतियाँ नारकी जीवों के वचन-पर्याप्ति के स्थान पर उदयरूप होती हैं ॥291॥

29 प्रकृतिया कौन-सी हैं ?

वैक्रियिक-2	तैजस-2	स्थिर-2
शुभ-2	अप्रशस्त विहायोगति 1	हुंडक संस्थान 1
निर्माण 1	पंचेन्द्रिय जाति 1	नरक गति 1
दुर्भग, दु:स्वर, अनादेय, अयश 4	अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास 4	त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक 4
	वर्ण-4	

www.JainKosh.org

याद रखने के लिए

- नरक गति
- पंचेन्द्रिय जाति
- वैक्रियिक शरीर-अंगोपांग
- हुंडक संस्थान
- परघात-3
- अप्रशस्त विहायोगति
- त्रस-4
- दुर्भग-4
- 12 ध्रुवोदयी प्रकृतियाँ

12 ध्रुवोदयी प्रकृतिया हैं —

- तैजस-कार्मण शरीर
- वर्ण-4
- अगुरुलघु, निर्माण
- स्थिर-अस्थिर
- शुभ-अशुभ

इनका उदय प्रत्येक अवस्था में पाया जाता है जब तक व्युच्छित्ति ना हो जाये ।

org

मिच्छमणंतं मिस्सं, मिच्छादितिए कमा छिदी अयदे ।
बिदियकसाया दुब्भग-णादेजदुगाउणिरयचऊ ॥292॥

- अर्थ— प्रथम नरक के मिथ्यादृष्टि आदि तीन गुणस्थानों में क्रम से मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार और सम्यग्मिथ्यात्व – ये उदय से व्युच्छिन्न होते हैं ।
- उसी घर्मा नरक के असंयत नामक चौथे गुणस्थान में दूसरी अप्रत्याख्यान कषाय की चौकड़ी, दुर्भग, अनादेय, अयशस्कीर्ति, नरकायु और नरक-चतुष्क (नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी, वैक्रियिक शरीर तथा वैक्रियिक अंगोपांग) – सब मिलकर 12 प्रकृतियों की उदय से व्युच्छित्ति होती है ॥292॥

www.JainKosh.org

प्रथम नरक में उदय-व्युच्छित्ति

उदय-योग्य प्रकृतिया = 76

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	1 मिथ्यात्व	74	सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व
2	4 अनंतानुबंधी-4	72	1 + 2 + नारकानुपूर्वी
3	1 मिश्र	69	5 + सम्यक्त्व + नारकानुपूर्वी
4	12 (अप्रत्याख्यान-4, नरक-4, नरकायु, दुर्भग, अनादेय, अयश)	70	5 + 1

बिदियादिसु छसु पुढविसु, एवं णवरि य असंजदट्ठाणे । णत्थि णिरयाणुपुव्वी, तिस्से मिच्छेव वोच्छेदो ॥293॥

- अर्थ— दूसरी वंशा आदि छह नरक की पृथ्वियों में घर्मा नरक की तरह ही उदयादि समझना । किंतु विशेषता इतनी है कि असंयत गुणस्थान में नरकगत्यानुपूर्वी का उदय नहीं है । इस कारण मिथ्यात्व गुणस्थान में ही मिथ्यात्व प्रकृति के साथ-साथ नरकगत्यानुपूर्वी की भी उदय-व्युच्छित्ति हो जाती है ॥293॥

द्वितीय से सप्तम पृथ्वी में उदय-व्युच्छित्ति

दूसरे और तीसरे गुणस्थान में नरक-आनुपूर्वी वैसे भी उदय-योग्य नहीं है। शेष पृथ्वियों में सम्यग्दृष्टि जन्म नहीं लेता अतः चतुर्थ गुणस्थान में भी इसका उदय संभव नहीं है। इसलिए मिथ्यात्व में ही इसकी व्युच्छित्ति हो जाती है।

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	1 + नारकानुपूर्वी	74	सम्यक्त्व, मिश्र
2	4	72	2 + 2 = 4
3	1	69	6 + 1 = 7
4	11	69	7

तिरिये ओघो सुरणर-णिरयाऊ उच्च मणुदुहारदुगं ।
वेगुव्वछक्कतित्थं, णत्थि हु एमेव सामण्णे ॥294॥

- अर्थ— तिर्यंच गति में गुणस्थान की तरह से ही उदयादि जानना । परंतु उनमें से देव-आयु, मनुष्यायु, नरकायु, उच्चगोत्र, मनुष्यगति-2, आहारक-2, वैक्रियिक-षट्क तथा तीर्थंकर — ये सब 15 प्रकृतियाँ उदय होने के योग्य नहीं हैं । इस कारण 107 प्रकृतियों का ही उदय हुआ करता है ।
- इसी प्रकार तिर्यंच के पाँच भेदों में से सामान्य तिर्यंचों में भी जानना ॥294॥

तिर्यंच गति में
उदय-योग्य प्रकृतिया

कुल उदय-योग्य	122
3 गति, आनुपूर्वी, आयु	– 9
आहारक-2	– 2
तीर्थंकर	– 1
वैक्रियिक-2	– 2
उच्च गोत्र	– 1
कुल	107

सामान्य तिर्यंच में उदय-व्युच्छित्ति

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	5	105	मिश्र, सम्यक्त्व
2	9	100	5 + 2 = 7
3	1	91	14 + 1 + तिर्यंचानुपूर्वी
4	8 (अप्रत्याख्यान-4, तिर्यंचानुपूर्वी, दुर्भग-3)	92	15
5	8	84	23

थावरदुगसाहारण-ताविगिविगलूण ताणि पंचक्खे ।
इत्थि अपज्जत्तूणा, ते पुण्णे उदयपयडीओ ॥295॥

- अर्थ— उक्त सामान्य तिर्यंच की 107 प्रकृतियों में से स्थावर-सूक्ष्म, साधारण, आतप, एकेन्द्रिय, विकलत्रय – इन आठ प्रकृतियों को घटा देने से बाकी बची 99 प्रकृतियाँ पंचेन्द्रिय-तिर्यंच के उदय योग्य हैं । और
- इन 99 प्रकृतियों में से भी स्त्रीवेद तथा अपर्याप्त प्रकृतियाँ कम करने से बची हुई 97 प्रकृतियाँ पर्याप्त-तिर्यंच के उदय योग्य कही गई हैं ॥295॥

पंचेन्द्रिय तिर्यंच में उदय-योग्य प्रकृतिया

तिर्यंच को उदय-योग्य	107
एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय	— 4
स्थावर-3 (स्थावर, साधारण, सूक्ष्म)	— 3
आतप	— 1
कुल	99

पंचेन्द्रिय तिर्यंच में व्युच्छित्ति
(107 – एकेन्द्रिय – विकलेन्द्रिय – स्थावर-3 – आतप = 99)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	2 (मिथ्यात्व, अपर्याप्त)	97	मिश्र, सम्यक्त्व
2	4 (अनंतानुबंधी-4)	95	2 + 2 = 4
3	1	91	6 + सम्यक्त्व + तिर्यंचानुपूर्वी
4	8	92	7
5	8	84	15

www.JainKosh.org

पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त में उदय-व्युच्छित्ति
(99 – अपर्याप्त – स्त्री वेद = 97)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	1	95	मिश्र, सम्यक्त्व
2	4	94	1 + 2 = 3
3	1	90	5 + सम्यक्त्व + तिर्यंच-आनुपूर्वी
4	8	91	6
5	8	83	14

www.JainKosh.org

पुंसंढूणित्थिजुदा, जोणिणिये अविरदे ण तिरियाणू ।
पुण्णिदरे थी थीणति, परघाददु पुण्णउज्जोवं ॥296॥

- अर्थ— योनिमत् अर्थात् तिर्यंचिनी के उपर्युक्त 97 प्रकृतियों में से पुरुषवेद और नपुंसकवेद को घटाकर तथा स्त्रीवेद मिलाने से 96 प्रकृतियां उदय योग्य हैं ।
- उसमें भी अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान में तिर्यंचगत्यानुपूर्वी का उदय नहीं है ।
- लब्ध्यपर्याप्तक पंचेंद्रिय-तिर्यंच के उन 96 प्रकृतियों में स्त्रीवेद, स्त्यानगृद्धि-3, परघात-2, पर्याप्त, उद्योत और (शेष आगे की गाथा में) ॥296॥

www.JainKosh.org

तिर्यंच योनिनी में उदय-व्युच्छित्ति
(99 - अपर्याप्त - पुरुष, नपुंसक वेद = 96)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	1	94	2
2	5 (4 + ति.आनु.)	93	1 + 2 = 3
3	1	89	6 + सम्यक्त्व = 7
4	7	89	7
5	8	82	14

सरगदिदु जसादेज्जं, आदीसंठाणसंहदीपणगं ।
सुभगं सम्मं मिस्सं, हीणा तेऽपुण्णसंढजुदा ॥297॥

- अर्थ— स्वर-2, विहायोगति-2, यशस्कीर्ति, आदेय, आदि के समचतुरस्र आदि पाँच संस्थान, वज्रऋषभनाराच आदि पाँच संहनन, सुभग, सम्यक्त्व प्रकृति और सम्यग्मिथ्यात्व – ये 27 कम करके तथा
- अपर्याप्त और नपुंसक वेद – ये दो प्रकृतियाँ मिलाने से कुल 71 प्रकृतियाँ उदय योग्य हैं ॥297॥

www.JainKosh.org

पंचेन्द्रिय तिर्यंच लब्धि-अपर्याप्त

पंचेन्द्रिय योनिनी को उदय-योग्य प्रकृतिया	96
स्त्रीवेद	– 1
स्त्यानगृद्धि-3	– 3
परघात, उच्छ्वास	– 2
पर्याप्त	– 1
उद्योत	– 1
स्वर-2	– 2
विहायोगति-2	– 2
यश, आदेय, सुभग	– 3
संस्थान	– 5
संहनन	– 5
सम्यक्त्व, मिश्र	– 2
कुल	= 69
अपर्याप्तक	+ 1
नपुंसक वेद	+ 1
कुल	= 71

पंचेन्द्रिय लब्धि-अपर्याप्त को उदय-योग्य 71 प्रकृतिया हैं ।

www.J

अन्य प्रकार से

घातिया

ज्ञानावरण	5
दर्शनावरण	6
मिथ्यात्व	1
चारित्र मोहनीय	23
अंतराय	5
कुल	40

अघातिया

वेदनीय	2
तिर्यंच आयु	1
नीच गोत्र	1
नामकर्म	27
कुल	31

नामकर्म की 27 कौन-सी ?

12 ध्रुवोदयी	12
तिर्यंच-2	2
पंचेन्द्रिय जाति	1
औदारिक-2	2
असंप्राप्ता. संहनन	1
हुंडक संस्थान	1
उपघात	1
त्रस, बादर, अपर्याप्त, प्रत्येक	4
दुर्भग-3	3
कुल	27

मणुवे ओघो थावर-तिरियादावदुग-एयवियलिंदि ।
साहरणिदराउतियं, वेगुव्वियछक्क परिहीणो ॥298॥

❁अर्थ— चार प्रकार के मनुष्यों में से सामान्य मनुष्य के, गुणस्थानों में कही हुई 122 प्रकृतियों में से स्थावर-तिर्यंचगति-आतप इन तीनों का युगल, एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय 3, साधारण, मनुष्यायु से अन्य तीन आयु, और वैक्रियिक-षट्क कम करने से बाकी उदय-योग्य 102 प्रकृतियाँ हैं ॥298॥

मनुष्य गति में उदय-योग्य

कुल उदय-योग्य प्रकृतिया	122
तिर्यक्-एकादश	— 11
वैक्रियिक-षट्क	— 6
3 आयु	— 3
कुल	102

तिर्यक्-एकादश (11)	
एकेन्द्रिय आदि 4 जाति	4
स्थावर, सूक्ष्म, साधारण	3
आतप, उद्योत	2
तिर्यंच-2	2

मिच्छमपुण्णं छेदो, अणमिस्सं मिच्छगादितिसु अयदे ।
बिदियकसायणराणू, दुब्भगऽणादेज्जअज्जसयं ॥299॥

❁अर्थ— मिथ्यात्व आदि तीन गुणस्थानों में से क्रम से

❁पहले में मिथ्यात्व और अपर्याप्त,

❁दूसरे में अनंतानुबंधी चार,

❁तीसरे में मिश्र दर्शनमोहनीय तथा

❁असंयत गुणस्थान में दूसरी अप्रत्याख्यान की चौकड़ी, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, दुर्भग, अनादेय और अयशस्कीर्ति – इन 8 प्रकृतियों की उदय से व्युच्छित्ति होती है ॥299॥

देसे तदियकसाया, णीचं एमेव मणुससामण्णे ।
पज्जत्तेवि य इत्थी-वेदापज्जत्तपरिहीणो ॥300॥

❁अर्थ— पाँचवें देशसंयत गुणस्थान में तीसरी प्रत्याख्यान कषाय और नीचगोत्र की उदय-व्युच्छित्ति होती है ।

❁उसके ऊपर छट्ठे आदि गुणस्थानों में जैसी कि पहले गुणस्थान के क्रम से उदय-व्युच्छित्ति बतायी है वैसी ही जानना ।

❁पर्याप्त मनुष्य में सामान्य मनुष्य की 102 प्रकृतियों में से स्त्रीवेद और अपर्याप्त प्रकृतियाँ कम करने से 100 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ॥300॥

www.JainKosh.org

मनुष्यगति में उदय-व्युच्छित्ति (102)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	2 (मिथ्यात्व, अपर्याप्त)	97	सम्यक्त्व, मिश्र, आ-2, तीर्थंकर = 5
2	4 (अन-4)	95	2 + 5 = 7
3	1	91	6 + स, आ-2, ती, मनुष्य-आनुपूर्वी = 11
4	8 (अप्र-4, दुर्भग-3, मनुष्यानुपूर्वी)	92	7 + आ-2, ती = 10
5	5 (प्र-4, नीच गोत्र)	84	15 +आ-2, ती = 18
6	5	81	20 + ती = 21
7	4	76	25 + ती = 26
8	6	72	29 + ती = 30
9	6	66	35 + ती = 36
10	1	60	41 + ती = 42
11	2	59	42 + ती = 43
12	16	57	44 + ती = 45
13	30	42	60
14	12	12	90

पर्याप्त मनुष्य में उदय-योग्य प्रकृतिया

मनुष्य सामान्य में उदय-योग्य प्रकृतिया	102
अपर्याप्त	– 1
स्त्री वेद	– 1
कुल	100

इन दो प्रकृतियों का अंतर मिथ्यात्व एवं अनिवृत्तिकरण गुणस्थान की व्युच्छित्ति में पड़ेगा । स्वयं इसका चार्ट बनाइये ।

मणुसिणि एत्थीसहिदा, तित्थयराहारपुरिससंढूणा ।
पुण्णिदरेव अपुण्णे, सगाणुगदिआउगं णेयं ॥301॥

☸अर्थ— उक्त 100 प्रकृतियों में स्त्री-वेद प्रकृति मिलाने और तीर्थंकर, आहारक-युगल, पुरुषवेद और नपुंसकवेद – ये 5 प्रकृतियाँ कम करने से 96 प्रकृतियाँ मनुष्यिनी के उदय-योग्य हैं ।

☸लब्धि-अपर्याप्तक मनुष्य के तिर्यंच लब्ध्यपर्याप्तक की तरह 71 प्रकृतियाँ उदय-योग्य समझना । परंतु आनुपूर्वी, गति और आयु — ये तीन प्रकृतियाँ तिर्यंच की छोड़कर मनुष्य-संबंधी ही जानना ॥301॥

www.JainKosh.or

मनुष्यिनी में उदय-योग्य (96)

मनुष्य सामान्य में उदय-योग्य 102

— अपर्याप्त — 1

- मनुष्यिनी पर्याप्त ही होती हैं अतः अपर्याप्त प्रकृति उदय-योग्य नहीं है ।

— पुरुषवेद, नपुंसकवेद — 2

- मनुष्यिनी के स्त्री वेद का ही उदय सम्भव है इसलिए शेष २ वेद कम किये ।

— तीर्थंकर — 1

- स्त्री-वेदी जीव तीर्थंकर नहीं होता इसलिए तीर्थंकर प्रकृति उदय-योग्य नहीं है ।

आहारक - 2 — 2

- मात्र पुरुष-वेदी के ही आहारक शरीर हो सकता है इसलिए आहारक-2 उदय-योग्य नहीं हैं ।

कुल 96

मनुष्यिनी में उदय-व्युच्छित्ति (96)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	मिथ्यात्व	94	सम्यक्त्व, मिश्र
2	5 (अन-4, मनुष्य-आनुपूर्वी)	93	1 + 2 = 3
3	1	89	6 + सम्यक्त्व = 7
4	7	89	7
5	5	82	14
6	3	77	19
7	4	74	22
8	6	70	26
9	4	64	32
10	1	60	36
11	2	59	37
12	16	57	39
13	30	41	55
14	11	11	85

मनुष्य लब्धि-अपर्याप्त में उदय-योग्य

तिर्यंच लब्धि-अपर्याप्त में उदय-योग्य	71
– तिर्यंचगति-2, तिर्यंच आयु	– 3
कुल	68
+ मनुष्यगति-2, मनुष्यायु	+ 3
कुल	71

www.JainKosh.org

मणुसोघं वा भोगे, दुब्भगचउणीचसंढथीणतियं ।
दुग्गदितित्थमपुण्णं, संहदिसंठाणचरिमपणं ॥302॥
हारदुहीणा एवं, तिरिये मणुदुच्चगोदमणुवाउं ।
अवणिय पक्खिव णीचं, तिरियदु-तिरियाउ-उज्जोवं ॥303॥जुम्मं ।

☸अर्थ— भोगभूमिया मनुष्यों में सामान्य मनुष्य की 102 प्रकृतियों में से दुर्भग आदि 4, नीचगोत्र, नपुंसकवेद, स्त्यानगृद्धि-3, अप्रशस्त विहायोगति, तीर्थंकर, अपर्याप्त, अंत के वज्रनाराच आदि पाँच संहनन तथा न्यग्रोधपरिमंडल आदि पांच संस्थान और आहारक-2 – इन 24 प्रकृतियों को घटा देने से बची हुई 78 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ।

☸इसी तरह भोगभूमिया तिर्यंच में भोगभूमिया मनुष्यों की तरह 78 प्रकृतियों में से मनुष्य-2, उच्चगोत्र और मनुष्यायु – इन चार प्रकृतियों को घटाकर तथा नीच गोत्र, तिर्यग्गति-2, तिर्यंचायु और उद्योत – इन पांच को मिलाने से 79 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ॥302॥303॥

www.JainKosh.org

भोगभूमि मनुष्य में उदय-योग्य

सामान्य मनुष्य में उदय-योग्य	102
दुर्भग, दु:स्वर, अनादेय, अयश	– 4
नीच गोत्र	– 1
नपुंसक वेद	– 1
स्त्यानगृद्धि-3	– 3
अप्रशस्त विहायोगति	– 1
तीर्थंकर, आहारक-2	– 3
अपर्याप्त	– 1
5 अशुभ संहनन	– 5
5 अशुभ संस्थान	– 5
कुल	78

भोगभूमिया मनुष्य में उदय-व्युच्छित्ति (78)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	मिथ्यात्व	76	मिश्र, सम्यक्त्व
2	4	75	1 + 2 = 3
3	1	71	5 + सम्यक्त्व + मनुष्य-आनु. = 7
4	5 (अप्र-4, मनुष्य-आनुपूर्वी)	72	6

भोगभूमिया तिर्यंच में उदय-व्युच्छित्ति (79)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	मिथ्यात्व	77	सम्यक्त्व, मिश्र
2	4	76	1 + 2 = 3
3	1	72	5 + सम्यक्त्व + तिर्यंच-आनु.
4	5	73	6

भोगभूमिया मनुष्य में उदय-योग्य 78	
— मनुष्य-2	– 2
— मनुष्य आयु	– 1
— उच्च गोत्र	– 1
कुल	74
+ तिर्यंच-2	+ 2
+ तिर्यंच आयु	+ 1
+ नीच गोत्र	+ 1
+ उद्योत	+ 1
कुल	79

भोगं व सुरे णरचउ-णराउवज्जूण सुरचउसुराउं ।
खिव देवे णेवित्थी, इत्थिम्मि ण पुरिसवेदो य ॥304॥

☸अर्थ— सामान्यपने से देवों में भोगभूमिया मनुष्यों की तरह 78 प्रकृतियों में मनुष्यगति आदि चार, मनुष्यायु, वज्रऋषभनाराच संहनन – इन 6 प्रकृतियों को घटाकर और देवगति आदि चार, देवायु – इन पांच को मिलाने से 77 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ।

☸परंतु देवों में स्त्रीवेद का उदय और देवांगनाओं में पुरुषवेद का उदय नहीं होता, इस कारण केवल देव तथा देवांगनाओं में 76 प्रकृतियाँ ही उदय-योग्य समझना ॥304॥

देवगति में उदय-व्युच्छित्ति (77)

भोगभूमिया मनुष्य में उदय-योग्य 78	
मनुष्य-2, मनुष्यायु	— 3
औदारिक-2	— 2
वज्रऋषभनाराच संहनन	— 1
कुल	72
सुर-चतुष्क	+ 4
देवायु	+ 1
कुल	77

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	मिथ्यात्व	75	सम्यक्त्व, मिश्र
2	4 (अन-4)	74	1 + 2 = 3
3	1	70	5 + सम्यक्त्व + देव-आनु. = 7
4	9 (अप्र-4, देव आयु, सुर-चतुष्क)	71	6

विशेष

देवगति में देवों के स्त्रीवेद का उदय नहीं होता, अतः

- देवों के 77 – 1 = 76 उदय-योग्य प्रकृतिया हैं ।

देवगति में देवियों के पुरुषवेद का उदय नहीं है, अतः

- देवियों के 77 – 1 = 76 उदय-योग्य प्रकृतिया हैं ।

अविरदठाणं एक्कं, अणुद्दिसादिसु सुरोघमेव हवे ।
भवणतिकप्पित्थीणं, असंजदे णत्थि देवाणू ॥305॥

☸अर्थ— नव अनुदिशादि 14 विमानों में एक असंयत गुणस्थान ही है । इस कारण देवों के अविरत गुणस्थान की तरह उदय-योग्य 70 प्रकृतियाँ जानना ।

☸भवनत्रिक देव-देवी तथा कल्पवासिनी देवियों के सामान्य देवों की तरह 77 प्रकृतियों में स्त्री-वेद अथवा पुरुष-वेद बिना 76 ही प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं । परंतु असंयत गुणस्थान में देव-गत्यानुपूर्वी का उदय नहीं है क्योंकि सम्यग्दृष्टि मरण कर भवनत्रयादि में उत्पन्न नहीं होता ॥305॥

भवनत्रिक और सभी देवियों में उदय-व्युच्छित्ति (76)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	1	74	सम्यक्त्व, मिश्र
2	5 (अन-4, देव-आनुपूर्वी)	73	1 + 2 = 3
3	1	69	6 + सम्यक्त्व = 7
4	8	69	7

सौधर्म से नवग्रैवेयक में उदय-व्युच्छित्ति (76)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	1	74	2
2	4	73	1 + 2 = 3
3	1	69	5 + सम्यक्त्व + देव-आनु. = 7
4	9	70	6

नव अनुदिश, 5 विमानों में अविरत सम्यक्त्व में उदय-योग्य 70 प्रकृतियाँ हैं ।

- Reference : गोम्मटसार कर्मकांड, सम्यग्ज्ञान चंद्रिका,

Presentation developed by

Smt. Sarika Vikas Chhabra

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889

इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप अवश्य लाभ लें । www.Jainkosh.org/wiki/Videos पेज पर जाएँ एवं प्लेलिस्ट चुनें ।